पाठ 17

सरलता और सहृदयता

वह नौकर बचपन से उनके घर काम करता आ रहा था। अब वह बूढ़ा हो गया था। उसने घर के बच्चों को अपनी उँगली पकड़कर चलना सिखाया था। अब वे बच्चे बड़े हो गए थे। वे बच्चे ऊँचे-ऊँचे पदों पर पहुँच गए थे। पर इस बूढ़े काका के प्रति सबके मन में स्नेह और सम्मान की भावना थी। सब उन्हें अपने परिवार का एक सदस्य समझते थे। परिवार वाले चाहते थे कि बूढ़े काका अब काम-काज करना बंद कर दें और शेष जीवन आराम से गुजारें, पर वे मानते ही नहीं थे। वे घर की सफाई, झाड़ू पोंछा तथा कमरों की देख-भाल खुद किया करते थे।

एक दिन बूढ़े काका अपने बाबू के पढ़ने के कमरे की सफाई कर रहे थे। अपने बाबू के एक-एक

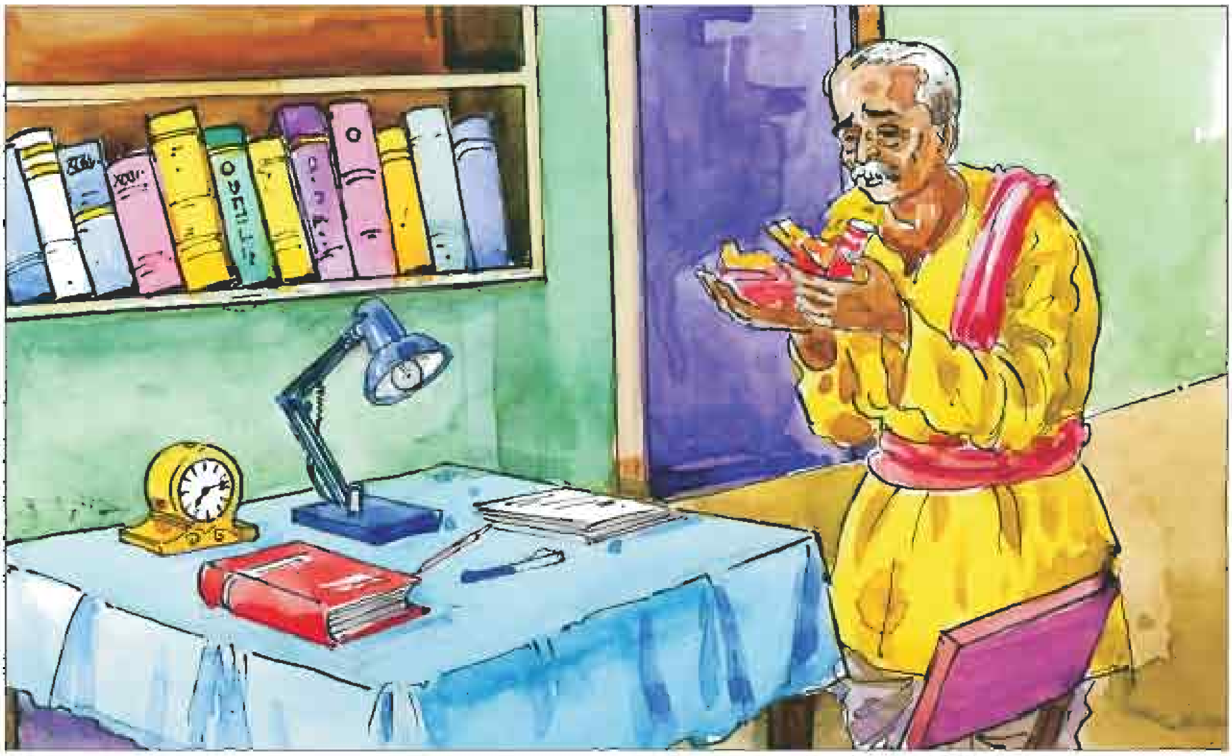

शिक्षण संकेत

- शिक्षक संस्मरण का वाचन करें तथा छात्रों से काराएँ।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के विषय में चर्चा करें। भारत के राष्ट्रपति के पद की संक्षिप्त जानकारी दें।

सामान को उठाते उसकी धूल पोंछते और उसे यथा–स्थान रख देते। अचानक न जाने कैसे उनके हाथ से एक बहुत कीमती कलमदान टूट गया। कोई साधारण कलमदान नहीं था। वह कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना था, बहुत कीमती तथा दुर्लभ था।

बूढ़े काकाजी टूटे हुए कलमदान को एकटक देखते रहे। उन्हें कुछ सूझा ही नहीं कि अब क्या करें? उन्होंने चुपचाप वह टूटा हुआ कलमदान उठाकर मेज पर रख दिया, पर वे बहुत घबरा गए। 'बाबू' आएँगे तो वे उनसे क्या कहेंगे? वे डाँटेगें तो मैं क्या उत्तर दूँगा? ऐसा कीमती कलमदान तो अब मिलेगा भी नहीं। कितना दुःख होगा 'बाबू' को? यही सोच–सोचकर उनका दिल बैठा जा रहा था।

सायंकाल 'बाबू' आए और भोजन के उपरान्त अपने कमरे में पहुँचे ही थे कि उनकी नजर टूटे हुए कलमदान पर पड़ी। वे इतने कीमती कलमदान को टूटा हुआ देखकर बहुत दुःखी हुए।

उन्होंने उसे उठाया तो देखा उसके दो टुकड़े हो चुके हैं। उन्होंने बूढ़े काका को आवाज़ दी 'काका! काका!'

बूढ़े काका ने डरते हुए प्रवेश किया।

'यह कलमदान किसने तोड़ा?'

'मुझसे टूट गया, मालिक।'

''कैसे?''

''मैं सफाई कर रहा था कि अचानक हाथ से छूट गया।''

''जानते हो यह कितना कीमती था? ऐसा दूसरा कलमदान कहाँ मिलेगा?''

बूढ़े काका सिर नीचा किए सुनते रहे।

''अब खड़े-खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो जाओ यहाँ से !.............और हाँ, कल से मेरे पढ़ने के कमरे की सफाई मत करना।'' बूढ़ा डाँट खाकर सिर नीचे किए चुपचाप चला गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। इससे पहले अपने बाबू से उसे कभी ऐसी डाँट नहीं खानी पड़ी थी।

रात हो गई 'बाबू' अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे सोने की कोशिश कर रहे थे, पर न जाने क्यों आज नींद आने का नाम नहीं लेती थी। उनका मन अशांत था। वे रह-रहकर अपने कलमदान, बूढ़े काका और उनके प्रति अपने व्यवहार के बारे में सोच रहे थे।

'बचपन से ही ये काका हमारे यहाँ काम कर रहे हैं' इन्होंने तो मुझे उँगली पकड़कर चलना सिखाया। क्या उनके प्रति मेरा ऐसा कठोर व्यवहार उचित था?

''क्या एक कलमदान एक व्यक्ति के सम्मान से अधिक कीमती है?''

'अगर गलती से उनसे वह कीमती कलमदान टूट भी गया तो क्या हुआ? यदि वह मुझसे गिरकर टूट जाता तो...........?'

'कितनी सेवा की है उन्होंने हमारे परिवार की? कभी शिकायत का कोई मौका नहीं दिया पर आज मैंने उन पर इतना क्रोध करके क्या उनकी सारी सेवा पर पानी नहीं फेर दिया?.........' इस तरह के अनेक सवाल 'बाबू' के मन में उठते और उनका मन अधीर हो उठता।

रात काफी हो चुकी थी। बाबू ने बूढ़े काका को आवाज दी। बूढ़े काका भी सो नहीं रहे थे। वे अपनी गलती को याद करके आँसू बहा रहे थे। अचानक बाबू की आवाज सुनकर उन्होंने आँसुओं को पोंछा और वे डरते-डरते 'बाबू' के कमरे की ओर जाने लगे। परन्तु काका ने देखा बाबू उन्हीं की ओर आ रहे हैं। काका की घबराहट और बढ़ गई। वे सोचने लगे ''शायद बाबू का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ है।'' काका सिर नीचे करके खड़े हो गए।

'काका ! मुझे माफ कर दो ! मैं अपने व्यवहार पर शर्मिंदा हूँ।'.................अचानक बाबू के मुँह से निकला।

बूढ़े काका उनके मुँह की ओर देखते रह गए। इतना बड़ा आदमी एक छोटे-से नौकर से माफी माँग रहा है। वह 'बाबू' के पैरों में गिरकर माफी माँगने को झुके ही थे कि बाबू ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। काका ! क्या आप मुझे क्षमा नहीं करेंगे?

'बाबू बोले, जब तक आप मेरे सर पर हाथ रखकर नहीं कहेंगे कि आपने मुझे क्षमा कर दिया है, मुझे चैन नहीं मिलेगा।'

बूढ़े काका की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उन्हें बाबू के सिर पर हाथ रखकर कहना पड़ा, ''अच्छा, चलो मैंने अपने 'बाबू' को क्षमा कर दिया।''

बच्चो ! क्या तुम जानते हो ये 'बाबू' कौन थे? ये 'बाबू थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। यह घटना तब की है, जब वे राष्ट्रपति भवन में थे और उनके एक पुराने बूढ़े सेवक से उनका एक बेशकीमती कलमदान टूट गया था जो उन्हें किसी बड़े आदमी ने उपहार में दिया था। जरा सोचो भारत के राष्ट्रपति होकर भी वे कितने उदार सहृदय और विनम्र थे। घमंड तो उन्हें छू तक भी न गया था।

▶ संकलित

नए शब्द

यथास्थान = उसी जगह। **दिल बैठना** = निराश हो जाना, भयभीत हो जाना। **अचानक** = सहसा, एकाएक। **सम्मान** = आदर। **उत्कृष्ट** = श्रेष्ठ **बेशकीमती** = बहुमूल्य, अधिक कीमत वाला। **साधारण** = मामूली। **दुर्लभ**= जिसे पाना सहज न हो, कठिनता से प्राप्त।

अनुभव विस्तार

प्रेरक प्रसंग से खोजिए-

(अ) सही जोड़ी बनाइए-

बूढ़े	–	कलमदान
कीमती	–	काका
गलत व्यवहार	–	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
भारत के राष्ट्रपति	–	क्षमा

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के ....राष्ट्रपति थे।
2. मैं अपने व्यवहार पर .... हूँ।
3. कीमती ....टूट गया।
4. बाबू राजेन्द्र प्रसाद के घर की सफाई का काम ....करते थे।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(स) 1. कलमदान कैसे टूट गया था?

2. बूढ़े काका को नींद क्यों नहीं आई?

3. 'बाबू' कौन थे?

4. अपने व्यवहार पर शर्मिंदा कौन था?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. बाबू राजेन्द्र प्रसाद के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।
2. डाँट खाने के बाद बूढ़े काका ने क्या सोचा?
3. सोते समय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बूढ़े काका के बारे में क्या सोच रहे थे?
4. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? स्पष्ट कीजिए।

1. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए-

1. काम करता था उनके घर बचपन से हर वह नौकर।
2. बच्चे हो गए थे अब वे बड़े।
3. बैठा जा रहा था उनका दिल सोच-सोचकर यही।
4. किसने तोड़ा कलमदान यह?
5. उपर्युक्त वाक्यों में शब्दों का क्रम सही नहीं है। शब्दों को सही क्रम में रखकर पुनः वाक्य बनाइए।

भाषा की बात

2. निम्नलिखित शब्दों में शुद्ध शब्द का चयन कर गोला लगाइए-

उतकृष्ट,	उत्कृष्ट	उतकृषट
कीमती	किमती	कीमति
राष्टरपति	राष्ट्रपती	राष्ट्रपति
सम्मान	सममान	सन्मान

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

बचपन - ....

बुढ़ापा - ....

सफाई – ....

दु:खी – ....

कीमती – ....

कारीगरी – ....

अब करने की बारी

1. भारत के राष्ट्रपति पद पर आसीन राजनेताओं की सूची तैयार कीजिए।
2. हमारे देश के प्रधानमंत्री पद पर रहने वाले व्यक्तियों के नाम लिखिए।
3. अपने ग्राम/शहर के पंचायत भवन और विद्यालय का चित्र बनाइए।
4. अपने पुस्तकलय से अपने प्रिय राष्ट्रपति अथवा प्रिय प्रधानमंत्री की जीवनी लेकर उनके किसी प्रेरक प्रसंग को संकलित करें तथा समस्त मित्रों से भी संकलित कराएँ। इन्हें एकत्रित कर विद्यालय की हस्तलिखित पत्रिका तैयार करें।

———— 0 ————